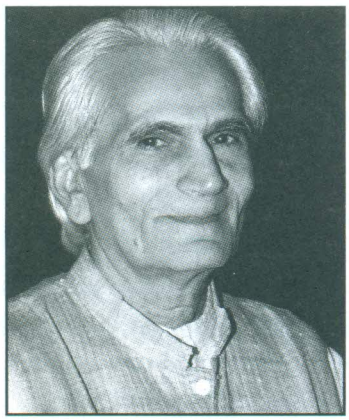

रघुवीर चौधरी

RAGHUVEER CHAUDHARY

डॉ. रघुवीर चौधरी, जिन्हें साहित्य अकादेमी अपनी महत्तर सदस्यता प्रदान कर रही है, गुजराती भाषा में भरपूर और विशिष्ट लेखन करनेवाले ऐसे भारतीय लेखक हैं, जिन्हें लोकप्रियता और आलोचकीय अनुमोदन दोनों ही समान रूप से प्राप्त हैं।

रघुवीर चौधरी का जन्म 1938 में एक किसान परिवार में हुआ। आपके पिता दलसिंह 'भगत' धर्मपरायण थे और माता जीतिबहन परिश्रमी थीं। आपकी अपनी स्कूली शिक्षा उत्तर गुजरात में स्थित अपने जन्मस्थान बापूपुरा के नजदीक मनसा में हुई। प्रकृति की गोद और माता-पिता एवं चार बड़े भाई-बहनों के लाड़-प्यार में पले-बढ़े रघुवीर ने बचपन में जीवन का जो कुछ भी सकारात्मक, अच्छा और सुंदर था, उसे आत्मसात किया। स्कूली जीवन में *भगवद्गीता* और महात्मा गाँधी, विनोबा भावे, गोवर्धनराम त्रिपाठी, उमाशंकर जोशी एवं मनुभाई पंचोली 'दर्शक' के लेखन ने आपके भीतर समानता, करुणा और बंधुत्व के मूल्यों और भारतीय संस्कृति के लोकाचारों को स्थापित किया। इसके बाद आपने अपने शिक्षकों डॉ. भोलाभाई पटेल, प्रो. जी.एन.डिक्की और डॉ. रामदरश मिश्र के सान्निध्य में रहकर गुजराती, संस्कृत और हिन्दी भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त की। कालिदास, टी.एस. इलियट, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकारों के जीवन और कृतित्व तथा महात्मा गाँधी की चर्चित आत्मकथा का आपके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा।

रघुवीर ने 1960 में गुजरात विश्वविद्यालय की अपनी स्नातक (हिन्दी) परीक्षा में पहला स्थान प्राप्त किया। इसके बाद आपने हिन्दी भाषा और साहित्य में 1962 में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की, फिर गुजरात विश्वविद्यालय से ही 'हिन्दी और गुजराती के धातुरूपों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कर 1979 में पी-एच.डी. की उपाधि से विभूषित किए गए। आपने 1977 में गुजरात विश्वविद्यालय के भाषा विभाग में योगदान किया और 1998 में प्रोफ़ेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में सेवानिवृत्त हुए। आपके शोध-निर्देशन में आठ अध्येताओं ने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है।

हृदय से गाँधीवादी होने के कारण रघुवीर ने अपनी किशोरावस्था में ही प्रौढ़ों को शिक्षा देने का कार्य किया, अपने विद्यालय के लिए एक छोटा

Dr Raghuveer Chaudhary on whom Sahitya Akademi is conferring its Fellowship is a prolific and outstanding Indian writer writing in Gujarati who has received, in equal measure, both popular acclaim and critical approbation.

Raghuveer Chaudhary was born in 1938 in a farmer's family of a devout father, Dalsinh 'Bhagat', and a hard-working mother, Jeetibahen. He completed his schooling at Mansa, near his native village Bapupura in North Gujarat. Growing up in the lap of nature, and pampered by parents and his four elder siblings, Raghuveer in his childhood absorbed all that is positive, good and beautiful in life. In his school-days *Bhagvat Gita* and the writings of Gandhi, Vinoba Bhave, Govardhanram Tripathi, Umashankar Joshi and Manubhai Pancholi 'Darshak' instilled in him the values of equality, compassion and brotherhood, and the ethos of Indian culture. He then mastered Gujarati, Sanskrit and Hindi languages under the guidance of his teachers Dr Bholabhai Patel, Prof. G.N. Dickey and Dr. Ramdarash Mishra. The life and writings of great litterateurs like Kalidasa, T.S. Eliot, Tagore and Premchand have left a deep impression on him as has Gandhi's famous autobiography.

Raghuveer secured the first place in his B.A. Hindi from Gujarat University in 1960. And after obtaining M.A. in Hindi language and literature in 1962, Raghuveer was awarded PhD in 1979 for his research on 'Comparative Study of Hindi and Gujarati Verbal Roots' by Gujarat University. He joined the Department of Languages of Gujarat University in 1977 and retired in 1998 as Professor and Head of the Department of Hindi. Eight students have obtained PhD degree under his guidance.

Being a Gandhian at heart since his adolescent days Raghuveer provided adult-education, set up a small library and theatre for his school, and thereby played

पुस्तकालय और रंगशाला स्थापित किए और इस प्रकार अपने गाँव को शत-प्रतिशत साक्षर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कॉलेज की छुट्टियों के दौरान आप विनोबा भावे के 'भूदान आंदोलन' से जुड़कर इसकी विभिन्न सामाजिक गतिविधियों का हिस्सा बनते थे। इन सब गतिविधियों ने आपको सामाजिक मुद्दों से सक्रिय संबद्ध रखा तथा आपको अफ़सोस प्रकट करनेवाला प्रेक्षक मात्र बनने से बचाया। रघुवीर गुजरात के 'नवनिर्माण आंदोलन' के दौरान सक्रिय थे और 1975 में आपातकाल का भी आपने दृढ़ता से प्रतिरोध किया। जनता के बीच दिए गए आपके भाषणों और आपकी रचनात्मक कृतियों में समाज में व्याप्त हर प्रकार के अन्याय एवं अत्याचार के प्रति आपके निडर एवं सुदृढ़ विचारों का निदर्शन प्राप्त होता है।

रघुवीर ने लेखन की शुरुआत कविता से की; और यद्यपि यह आपका पहला प्यार है, उपन्यासों के माध्यम से कथा-रचना की आपकी क्षमता ने आपको नाम और यश प्रदान करते हुए गुजराती साहित्य का शीर्ष व्यक्तित्व बना दिया। निश्चित रूप से काव्य-तत्त्व और सुस्पष्ट चित्रण ने आपके आख्यान को अद्वितीय आह्वानकारी शक्ति प्रदान की है। रघुवीर गहरी संवेदना के लेखक हैं, जो अध्यात्म एवं विज्ञान, विवेकसम्मत सोच एवं गहरे मानवीय मनोभावों के सह-अस्तित्व पर विश्वास करते हैं। रघुवीर की शैली का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पक्ष आपकी अनूठी विनोद-वृत्ति, जो हमेशा सूक्ष्म व्यंग्य एवं विदग्धता से युक्त होती है, को खोए बिना सत्य और सौंदर्य का अनुसंधान करना है। महात्मा गाँधी की तरह, रघुवीर ने सत्याग्रह के महत्त्व को महसूस किया और किसी को दिए जानेवाले उपदेशों के स्वयं भी परिपालन की उनकी नीतियों को अपनाते हुए, सदैव यह प्रयास किया कि 'शब्द' और 'जीवन' के बीच कोई दूरी न रहे। आपके उपन्यास विभिन्न स्तरों पर क्यों पुनर्लेखित किए गए, इसका स्पष्टीकरण शायद इसी बात में छिपा है।

यद्यपि रघुवीर प्रारंभ में अपने 'विचारों के उपन्यास' से मुग्ध थे, लेकिन मानवीय जीवन की दैनंदिन वास्तविकताओं के महत्त्व पर आपके भरोसे ने आपके आस-पास की जीवंत दुनिया को उसकी गहरी समझ और करुणा के साथ देखने और समझने के लिए आगे प्रेरित किया। इस विकास को आपकी अविकल कथायात्रा में देखा जा सकता है, *अमृता* (1965) और *वेणु वत्सला* (1973) से *उपरवास* (1975) तथा *लाग्नी* (1976) से *समज्या वीणा छुट पाडउं* (2003) एवं *एक डग आगल बे डग पाछल* (2009) तक। *सोमतीर्थ* (1996) और *रुद्रमहालय* (1978) को गुजराती में ऐतिहासिक उपन्यासों का कालजयी उदाहरण स्वीकार किया गया, विशेषकर *सोमतीर्थ*, जिसमें अतीत के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक भारत की समस्याओं पर विचार किया गया है।

रघुवीर की कहानियाँ मानवीय जीवन और संबंधों की अनिश्चितता एवं जटिलता का चित्रण करती हैं। कुछ सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं : 'पोटकुन', 'पूर्ण सत्य', 'चित्र', 'उड़ गए फुलवा रह गई बास' तथा 'पक्षाघात'। आपके

an instrumental role in making his village hundred-percent literate. During vacations, he would join Vinobaji's 'Bhudaan Movement' and be part of its various social activities. All these led him to actively engage with social issues and prevented him from being a mere spectator to the sorry state of affairs around him. Raghuveer was active during 'Navnirman Aandolan' in Gujarat and protested strongly against the Emergency in 1975. His public speeches and creative works have always reflected his fearless and bold opinions towards injustice and oppression of any kind in society.

Raghuveer started by writing poetry, and though it has remained his first love, it is his ability to weave powerful narratives in the genre of novel which has brought him name and fame as a leading Gujarati literary figure. It is definitely the poetic element and the use of visual imagery which give his narratives their unmatched evocative power. Raghuveer is a writer of deep sensitivity who believes in the co-existence of spirituality and science, rational thought and deep human emotions. One of the most remarkable aspects of Raghuveer's style is his ability to seek truth and beauty without losing his unique sense of humour which is always woven with subtle satire and wit. Like Gandhi, Raghuveer has realized the importance of striving for truth, and adopting his policy of practicing one's preaching, he has always tried to erase the distance between 'Word' and 'Life'. That perhaps explains why many of his novels have been rewritten at one stage or the other.

Though Raghuveer was initially fascinated by the 'novel of ideas' his faith in the importance of the day-to-day realities of human life has made him observe and understand the lived world around him with great understanding and compassion. This development is visible throughout his fiction-writing career, from *Amruta* (1965) and *Venu Vatsala* (1973) to *Uparvaas* (1975) and *Laagni* (1976) to *Samjyaa Vinaa Chhuta Padavun* (2003) and *Ek Dag Aagal Be Dag Paachhal* (2009). *Somtirth* (1996) and *Rudramahalaya* (1978) are considered classic examples of the historical novel in Gujarati, especially *Somtirth* which deals with the problems of modern India in the context of the past.

Raghuveer's short stories portray the uncertainty and complexity of human life and relations. Some of the best examples are 'Potkun', 'Purna Satya', 'Chita', 'Ud Gaye Fulwa Rah Gayi Baas' and 'Pakshaghat'. His plays like 'Sikandar Saani', 'Najeek', 'Ashokvan', 'Jhulta Minara' and 'Trijo Pourish' have been performed by

'सिकंदर सानी', 'नजीक', 'अशोक वन', 'झूलता मीनार' और 'त्रिजो पौरिष' जैसे नाटक सुपरिचित कलाकारों द्वारा मंचित हुए और बहुत ही ज़्यादा प्रशंसित भी। एकांकी 'डिम लाइट' ने दर्शकों पर विशेष प्रभाव छोड़ा और अनेकश: प्रदर्शित किया गया। रघुवीर की एक विशिष्ट प्रवृत्ति सुपरिचित व्यक्तित्वों के अनदेखे पक्षों को लिखने की भी है। *सहरानी भव्यता, तिलक करे रघुवीर 1-2* (1998) तथा *मानस थी लोकमानस* गुजरात के अनेक साहित्यिक, सामाजिक और आध्यात्मिक व्यक्तित्वों के विविधतापूर्ण चरित्र-चित्रण के कारण प्रशंसित हुए।

रघुवीर विभिन्न साहित्यिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक संगठनों से सक्रिय संबद्ध हैं। गुजराती साहित्य परिषद के ट्रस्टी एवं अध्यक्ष के रूप में आपके अथक प्रयत्नों के कारण ही अहमदाबाद में नदी-किनारे परिषद् का अपना भवन बन पाना संभव हुआ। आप पच्चीसवें भारतीय फ़िल्मोत्सव के निर्णायक मंडल के सदस्य भी थे। 1998 में रघुवीर साहित्य अकादेमी, दिल्ली के कार्यकारी मंडल के सदस्य निर्वाचित हुए। आप 2002-04 के दौरान भारतीय प्रेस परिषद् के सदस्य भी मनोनीत हुए।

1990 में गुजरात विश्वविद्यालय में पत्रकारिता के अलग विभाग के गठन में रघुवीर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। लोकप्रिय स्तंभकार के रूप में आपने *संदेश, जन्मभूमि* और *दिव्य भास्कर* जैसे अनेक दैनिक और साप्ताहिक पत्रों में स्तंभलेखन किया।

रघुवीर को युवावस्था से ही पुरस्कार मिलने शुरू हो गए थे। आपको 1965 में कविता के लिए कुमार पदक मिला, जबकि आपका दूसरा उपन्यास *अमृता* (1965), जो गुजराती के दस सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में से एक है, को राज्य सरकार का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके बाद आपको रणजीत राम स्वर्ण पदक एवं उमा स्नेहरश्मि पुरस्कार प्राप्त हुए तथा 1977 में *उपरवास कथात्रयी* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने 1960 में हिन्दी भाषा में आपके योगदान के लिए आपको सौहार्द सम्मान से विभूषित किया। आपको अभिवादन ट्रस्ट सम्मान, दर्शक सम्मान (1995), कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी स्वर्ण पदक, नंदशंकर मेहता पुरस्कार (*कच सुतेरने तांतने* उपन्यास के लिए) और गोवर्धन राम त्रिपाठी पुरस्कार (*सोमतीर्थ* उपन्यास के लिए) भी प्राप्त हुए हैं। गुजरात साहित्य अकादमी ने रघुवीर चौधरी को 2002 में गौरव पुरस्कार से विभूषित किया और यही पुरस्कार 2011 में हिन्दी साहित्य अकादमी ने भी प्रदान किया।

रघुवीर चौधरी को गुजरात साहित्य अकादमी, ब्रिटेन (1982), गुजराती लिटरेरी एकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका (1991, 2000 एवं 2002) तथा भारतीय विद्या भवन, संयुक्त राज्य अमेरिका (2003) ने गुजराती एवं भारतीय साहित्य पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया। एसओएएस (SOAS), लंदन विश्वविद्यालय ने 1992 में आपको विज़िटिंग रिसर्च फ़ेलौ के रूप में आमंत्रित किया।

well-known artists and have been much appreciated. The one-act play 'Dim Light' remains a favourite with the audience and has seen innumerable performances. Raghuveer also has a distinct flair for penning the unseen aspects of known personalities. *Saharaani Bhavyataa, Tilak Kare Raghuveer 1-2* (1998) and *Maanas thi Lokmaanas* have been praised for their vivid characterizations of many literary, social and spiritual figures of Gujarat.

Raghuveer has been actively associated with various literary, academic and cultural organizations. It is because of his tireless efforts as the Trustee and President that Gujarati Sahitya Parishad has been able to get its own building near the river-front in Ahmedabad. He has also been a Member of the Jury of the 25th Indian Film Festival. In 1998, Raghuveer was appointed as a member of the Executive Committee of Sahitya Akademi, Delhi. He was also nominated as a Member of the Press Council of India during 2002-04.

Raghuveer was instrumental in setting up of a separate department for journalism at Gujarat University in 1990s. As a popular columnist, he has contributed to numerous dailies and weeklies such as *Sandesh, Janmabhoomi* and *Divya Bhaskar*.

Raghuveer started getting awards at a very young age. He received the Kumar Medal for Poetry in 1965, while his second novel *Amruta* (1965), considered one of the best ten novels in Gujarati, received the first prize from the State Government. This was followed by Ranjeetram Gold Medal and Uma-Sneharashmi Prize, and in 1977, the Sahitya Akademi Award for his much-acclaimed *Uparvaas Kathatrai*. Uttar Pradesh Hindi Sansthan honoured Raghuveer Chaudhary with Sauhaard Sanman in 1990 for his contribution to Hindi language. He has also been the recipient of Abhivadan Trust Award, Darshak Award (1995), K.M. Munshi Gold Medal, Nandshankar Mehta Award (for the novel *Kacha Suterne Taantne*) and Govardhanram Tripathi Award (for the novel *Somtirth*). Gujarat Sahitya Akademi conferred upon Raghuveer Chaudhary the Gaurav Puraskaar in 2002 which was followed by the same honour from Hindi Sahitya Akademi in 2011.

Raghuveer Chaudhary has been invited by the Gujarat Sahitya Akademi of Britain (1982), the Gujarati Literary Academy of North Americas (1991, 2000 and 2002) and the Bharatiya Vidya Bhawan, USA (2003) to deliver lectures on Gujarati and Indian literature. SOAS, University of London invited him as a Visiting Research Fellow in 1992.

सेवानिवृत्ति के पश्चात् रघुवीर चौधरी अपना जीवन सप्ताहांत-किसान के रूप में आनंदपूर्वक बिता रहे हैं। आप अपना ज़्यादातर समय अपने गाँव बापूपुरा के खेतों में गुज़ारते हैं। शिक्षा, जल की कमी और प्राधिकृत क्षेत्रों के संपूर्ण विकास के प्रति आपके सरोकारों के कारण आप लोकभारती ग्राम विद्यापीठ (सनसोरा, भावनगर), ग्रामभारती (गाँधीनगर) और मोतीभाई फ़ाउंडेशन फ़ॉर वाटर रिचार्जिंग जैसे विभिन्न संगठनों के ट्रस्टी के रूप में सक्रिय हैं। आप आद्यकवि नरसिंह मेहता साहित्य निधि के ट्रस्टी और अध्यक्ष भी हैं।

साहित्य अकादेमी डॉ. रघुवीर चौधरी को अपना उच्चतम सम्मान, *महत्तर सदस्यता* प्रदान करते हुए बहुत ज़्यादा गौरव अनुभव कर रही है।

After retirement Raghuveer Chaudhary has been enjoying his life as a weekend-farmer. He spends most of his time relaxing in the two farms of his village, Bapupura. His concern for the education, water scarcity and overall development of the underprivileged areas has resulted in his active participation as a Trustee for various organizations like Lokbharti Gramvidyapeeth (Sansora, Bhavnagar), Grambharti (Gandhinagar) and Motibhai Foundation for Water Recharging. He is also the Chairman and Trustee of Adya Kavi Narsinh Mehta Sahitya Nidhi.

Sahitya Akademi feels extremely proud in conferring its highest honour of Fellowship on Dr Raghuveer Chaudhary.